History of abnormal psychology

हमारे ऐतिहासिक प्रयासों में, असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology) को समझने की प्रक्रिया में हास्य और त्रासदी, दोनों ही शामिल रहे हैं। इस अध्याय में, प्राचीन काल से लेकर इक्कीसवीं सदी तक मनोविकार (Psychopathology) की विभिन्न धारणाओं और उनके उपचारों पर प्रकाश डाला गया है।

एक व्यापक दृष्टिकोण से देखें तो, हम यह देखेंगे कि मान्यताओं में प्रगति हुई है—जो पहले अंधविश्वास मानी जाती थीं, वे अब वैज्ञानिक जागरूकता पर आधारित हो गई हैं। यानी, अलौकिक (Supernatural) व्याख्याओं से प्राकृतिक कारणों (Natural Causes) की समझ तक का सफर तय किया गया है।

इस विकास प्रक्रिया के दौरान, कभी-कभी उल्लेखनीय प्रगति या किसी विशिष्ट व्यक्ति के अनूठे योगदान देखे गए हैं, जबकि अन्य समय में वर्षों तक कोई महत्वपूर्ण प्रगति नहीं हुई या विचारधाराएँ पिछड़ गईं और निष्प्रभावी रहीं।

हालाँकि, मानव जीवन लगभग 30 लाख (3 मिलियन) या उससे अधिक वर्ष पहले पृथ्वी पर प्रकट हुआ, लेकिन लिखित अभिलेख (Written Records) केवल कुछ हजार वर्षों से ही उपलब्ध हैं। इस कारण, हमारे प्रारंभिक पूर्वजों के बारे में हमारी जानकारी सीमित है।

मनोविकारों (Behavior Disorders) और बीमारियों के शुरुआती उपचारों के कुछ सुराग हमें सोलहवीं शताब्दी ईसा पूर्व (16वीं सदी ई.पू.) के दो मिस्री (Egyptian) पपीरस (प्राचीन कागज) से मिलते हैं (Okasha & Okasha, 2000)।

एडविन स्मिथ पपीरस (Edwin Smith Papyrus), जिसे उसके उन्नीसवीं सदी के खोजकर्ता के नाम पर रखा गया था, इसमें घावों के उपचार और अन्य शल्यक्रियाओं (Surgical Operations) के विस्तृत वर्णन शामिल हैं। इसमें पहली बार मस्तिष्क (Brain) का उल्लेख किया गया है, और लेखन से स्पष्ट होता है कि मानसिक क्रियाओं (Mental Functions) के केंद्र के रूप में मस्तिष्क को पहचाना गया था।

एबर्स पपीरस (Ebers Papyrus) उपचार के एक अन्य दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। इसमें आंतरिक चिकित्सा (Internal Medicine) और संचार प्रणाली (Circulatory System) को शामिल किया गया है, लेकिन इसमें बीमारियों की व्याख्या और उपचार के लिए अधिकतर मंत्रों (Incantations) और जादू (Magic) पर निर्भर किया गया है।

हालाँकि, शल्य चिकित्सा (Surgical Techniques) का उपयोग किया गया होगा, लेकिन संभवतः इसे प्रार्थनाओं (Prayers) के साथ जोड़ा गया था, जो उस समय प्रचलित मानसिक रोगों (Mental Illness) की उत्पत्ति की धारणाओं को दर्शाता है।

हालाँकि असामाजिक व्यक्तित्व विकारों (Antisocial Personality Disorders) पर उन्नीसवीं सदी तक मनोचिकित्सा (Psychiatry) में अधिक ध्यान नहीं दिया गया था, लेकिन इन विकारों ने सभी समाजों के लिए गंभीर समस्याएँ खड़ी की हैं।

कानूनी और धार्मिक साहित्य (Legal and Religious Literature) से प्रमाण मिलते हैं कि व्यक्तित्व संबंधी समस्याओं वाले कुछ व्यक्तियों ने सभ्यता की शुरुआत से ही समाज के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं।

प्राचीन मेसोपोटामिया (Ancient Mesopotamia), अर्थात आठवीं सदी ईसा पूर्व (8वीं सदी ई.पू.) से पहले, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं (Mental Health Problems) को स्पष्ट रूप से पहचाना गया था। उन समस्याओं का वर्णन आधुनिक नैदानिक पुस्तिकाओं (Diagnostic Manuals) जैसे कि **ICD-10** और **DSM-5** में व्यक्तित्व विकार (Personality Disorders) के रूप में किया जाता है।

असामाजिक व्यक्तित्व समस्याओं (Antisocial Personality Problems) का उल्लेख मेसोपोटामिया की प्राचीन पद्धति में मिलता है, जिसे मिट्टी की कीलाक्षर पट्टिकाओं (Cuneiform Tablets) पर दर्ज किया गया था। ये पट्टिकाएँ अश्शूरबनीपाल (Ashurbanipal) के महल में मिली थीं, जो आज के इराक़ (Iraq) में स्थित है। वर्तमान में ये पट्टिकाएँ ब्रिटिश संग्रहालय (British Museum) में रखी गई हैं।

इन पट्टिकाओं में असामाजिक व्यवहार (Antisocial Behaviors) का वर्णन किया गया है, जिसमें शामिल हैं:

- चिड़चिड़ापन (Irritability) और आक्रामकता (Aggressiveness)
- पछतावे की कमी (Lack of Remorse)
- दूसरों को नुकसान पहुँचाना, दुर्व्यवहार करना या चोरी करना (Hurting, Mistreating, or Stealing from Others)
- कानूनी और सामाजिक मानदंडों (Social Norms) का पालन न करना
- आवेगशीलता (Impulsivity) या भविष्य की योजना बनाने में असफलता
- गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार (Irresponsible Behaviors)

आज के मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ (Mental Health Practitioners) इन लक्षणों को पहचानते हैं और इन्हें व्यक्तित्व विकारों (Personality Disorders) के रूप में वर्गीकृत करते हैं।

उस समय इन व्यवहारगत समस्याओं (Behavioral Problems) का समाधान औषधीय उपचार (Medical Treatment) के माध्यम से नहीं किया जाता था, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों (Religious Rites) और मंत्रोच्चारण (Incantations) के द्वारा किया जाता था। यह माना जाता था कि लोग इन असामाजिक प्रवृत्तियों (Antisocial Traits) से मुक्ति पाने के लिए विशेष मंत्रों का जाप करते थे।

प्राचीन लेखनों में असामान्य व्यवहार (Abnormal Behavior) के संदर्भ से पता चलता है कि **चीनी (Chinese), मिस्री (Egyptians), हिब्रू (Hebrews), और यूनानी (Greeks)** सभ्यताओं में अक्सर ऐसे व्यवहार को किसी **दैवीय शक्ति (God) या राक्षसी आत्मा (Demon)** के कब्जे के रूप में देखा जाता था।

यह विश्वास किया जाता था कि व्यक्ति पर किसी आत्मा (Spirit) ने अधिकार कर लिया है। यह आत्मा अच्छी या बुरी (Good Spirit or Evil Spirit) हो सकती थी, और इसका निर्धारण व्यक्ति के लक्षणों (Symptoms) के आधार पर किया जाता था।

- यदि किसी व्यक्ति की **बोली (Speech)** या **व्यवहार (Behavior)** में धार्मिक (Religious) या रहस्यमयी (Mystical) तत्व दिखाई देते थे, तो यह माना जाता था कि वह किसी **अच्छी आत्मा (Good Spirit) या देवता (God)** के प्रभाव में है।
- ऐसे लोगों को समाज में विशेष सम्मान (Respect) और आदर (Awe) दिया जाता था क्योंकि माना जाता था कि उनमें **अलौकिक शक्तियाँ (Supernatural Powers)** हैं।
- हालाँकि, अधिकांश मामलों में यह माना जाता था कि व्यक्ति पर किसी **क्रोधित देवता (Angry God)** या **बुरी आत्मा (Evil Spirit)** का प्रभाव है, खासकर जब कोई व्यक्ति अत्यधिक उत्तेजित (Excited) या अति सक्रिय (Overactive) हो जाता था और ऐसा व्यवहार करता था जो धार्मिक शिक्षाओं (Religious Teachings) के विरुद्ध होता था।
- उदाहरण के लिए, **प्राचीन हिब्रू (Ancient Hebrews)** समाज में इस प्रकार की आत्माओं के कब्जे को **ईश्वर के क्रोध (Wrath of God)** और **दंड (Punishment)** के रूप में देखा जाता था।

यह दंड संभवतः भगवान की सुरक्षा वापस लेने और व्यक्ति को बुरी शक्तियों के हवाले कर देने के रूप में देखा जाता था। ऐसे मामलों में, व्यक्ति को दुष्ट आत्मा से मुक्त कराने के लिए हर संभव प्रयास किया जाता था। दैवीय आधिपत्य (भूत-प्रेत बाधा) के उपचार का मुख्य तरीका **'भूत-प्रेत निकालना' (एक्सॉर्सिज़्म)** था, जिसमें दुष्ट आत्मा को बाहर निकालने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जाता था। ये तकनीकें भिन्न-भिन्न हो सकती थीं, लेकिन आमतौर पर इनमें **जादू-टोना, प्रार्थना, मंत्रोच्चार, तेज आवाजें करना, और भेड़ की लीद एवं शराब से बने कड़वे मिश्रण का सेवन कराना** शामिल था।